Deccan Chronicle- 17- October-2022

Water level increasing in Bhavanisagar, Mettur dams

DC CORRESPONDENT
ERODE, OCT. 16

The water level in Bhavanisagar Dam, the source of drinking water for the people of Erode, Karur and Tirupur districts, is rising due to widespread rains in the catchment areas for the past few days. The level is expected to reach 102 feet by Monday. After that, excess water will be released into the Bhavani river to ensure the safety of the dam. An alert is likely to be issued to the people living on the Bhavani banks. The public works department is closely monitoring the situation.

Meanwhile, due to heavy rains in the Cauvery catchment areas, the inflow of water to the Mettur Dam has increased, reaching its full capacity of 120 feet. The surplus water from Mettur Dam is being released into the Cauvery.

Due to this, a flood warning was issued for 11 districts including Erode. As much as 1.85 lakh cubic feet of water is being released from Mettur Dam since Sunday morning. Similarly, the temple in Kavirioram was flooded due to flooding in the Cauvery at Karungalpalayam.

More than 50 houses in Ilupu Thoppu and Chatrapatti areas have been flooded in Kodumudi area. People have been safely accommodated in a nearby marriage hall.

Houses on the banks of Cauvery river in Erode's Karungalpalayam area flooded. —DC

1.80 L cusecs of water from Mettur dam has been released into Cauvery river. The water touches the old bridge connecting Erode Karungalpalayam-Pallipalayam. —DC

Jansatta- 17- October-2022

बदल रही है बरसात की चाल

योगेश कुमार गोयल

मानूसनी बारिश में अब शहर के शहर, गांव के गांव डूब जाते हैं। ऐसे में यह गंभीर सवाल खड़ा होता है कि आखिर मानसूनी बारिश अपना व्यवहार क्यों बदल रही है? अति वर्षा और बाढ़ की स्थिति के लिए जलवायु परिवर्तन के अलावा विकास की विभिन्न परियोजनाओं के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई, नदियों में अवैध खनन आदि प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं, जिससे मानसून प्रभावित होने के साथ-साथ भू-क्षरण और नदियों द्वारा कटाव के चलते तबाही के मामले बढ़ रहे हैं।

इस साल मानसून की शुरुआत से ही देश के विभिन्न हिस्सों में मूसलाधार बारिश, बाढ़, बादल फटने, बिजली गिरने और भू-स्खलन से तबाही का सिलसिला शुरू हो गया। देश के कई इलाके बारिश के लिए तरसते रहे, तो अनेक इलाकों में आसमानी आफत टूटती रही। इससे बहुत सारे लोगों की मौत हो गई। यह पर्यावरण असंतुलन का ही दुष्परिणाम है कि साल-दर-साल बरसात में तबाही की तीव्रता बढ़ रही है। अक्तूबर माह में भी भारी बारिश के कारण देश के कई राज्यों में काफी तबाही हुई है। फसलों को काफी नुकसान हुआ है, जिसके चलते आने वाले दिनों में महंगाई बढ़ने की आशंका जताई जा रही है। अक्तूबर मध्य में भी भारी बारिश होने से डेंगू जैसी बीमारियां भी बढ़ रही हैं।

'क्लाइमेट ट्रेंड्स' की एक रिपोर्ट के मुताबिक जुलाई से सितंबर के दौरान मानसून प्रायः झारखंड, बिहार तथा पश्चिम बंगाल के रास्ते उत्तर प्रदेश से होकर आगे बढ़ता है, मगर इस वर्ष इसने उत्तर भारत में प्रवेश के अपने परंपरागत मार्ग गंगीय मैदान क्षेत्र के बजाय मध्य भारत का रास्ता पकड़ा। मध्य भारत से होते हुए राजस्थान की ओर बढ़ गया, जिसके चलते इस वर्ष उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार तथा पश्चिम बंगाल में काफी कम बारिश हुई, जबकि मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा कुछ अन्य इलाकों में खूब बारिश हुई। इस रिपोर्ट के मुताबिक मानूसन के तरीके में दूसरा बड़ा बदलाव यह देखा गया कि इस बार अधिकांश 'सिस्टम' बंगाल की खाड़ी में निर्मित हुए, जिसके चलते शुरुआती बारिश तमिलनाडु और कर्नाटक में काफी ज्यादा हुई, जबकि अरब सागर से लगते तटीय इलाकों में कम बारिश हुई। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक मानूसन में बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों ही ओर से कम दबाव का क्षेत्र तथा चक्रवाती परिसंचरण निर्मित होते हैं, जो समूचे भारत में मानसूनी बारिश करते हैं। मगर अरब सागर में बनने वाले सिस्टम घटने से मानसून का मिजाज बिगड़ रहा है। मानसून के दौरान महीने के अधिकांश दिन अब सूखे निकल जाते हैं, तो कुछेक दिनों में ही इतनी बारिश हो जाती है कि लोगों की मुसीबतें कई गुना बढ़ जाती हैं।

जलवायु विज्ञानियों का मानना है कि वैश्विक तापमान के कारण मानसून प्रभावित हुआ है और इसी कारण भारत में मानसून की विदाई के समय मानसूनी बारिश का सिस्टम बन रहा है। इसी के चलते अक्तूबर के महीने में भी इस साल भारी बारिश हुई। 1971 से 2009 के दौरान मानसून के छंटने के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर मौसम विभाग द्वारा 2020 में मानसून के छंटने की तारीख 17 सितंबर निर्धारित कर दी गई थी, लेकिन देश के कई राज्यों में अब मानसून की अवधि लगातार लंबी हो रही है। सामान्य तौर पर भारत में मानसून सितंबर मध्य में वापस लौटने लगता है, जिसे 'मानसून विड्राल' कहा जाता है। इस दौरान बारिश खत्म होने के साथ ही नमी में कमी दर्ज की जाती है और देश के उत्तर-पश्चिमी हिस्सों में बारिश का धीरे-धीरे कम होना जारी रहता है। उत्तर पश्चिम भारत में जहां अक्तूबर के पहले सप्ताह में ही मानसून बाद की बारिश की गतिविधियां समाप्त हो जाती थी, वहीं यह सिलसिला अब अक्तूबर के तीसरे सप्ताह तक जारी रहने लगा है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक सामान्य तौर पर मानूसन समूचे भारत से 5 अक्तूबर तक विदा हो जाना चाहिए।

उत्तर पश्चिमी राज्यों में मानसून प्रायः राजस्थान में करीब डेढ़ महीने और पूर्वी उत्तर प्रदेश में करीब तीन महीने रहता था, मगर अब यह राजस्थान में दो महीने और पूर्वी उत्तर प्रदेश में करीब चार महीने तक टिक रहा है। उत्तर भारत में अब बारिश के मौसम को सोलह दिनों तक विस्तारित किया जा चुका है। मौसम विभाग के मुताबिक इस साल मानसून कई जगहों पर देर से पहुंचा, जिसके चलते देश के पश्चिमी हिस्सों में सितंबर तक सक्रिय रहा और इसी सक्रियता का असर मानसून के लौटने की प्रक्रिया पर पड़ा है। पर्यावरण विज्ञानियों के अनुसार मानसून का परंपरागत मार्ग बदलने से जलवायु पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा, जिसका असर इंसानों से लेकर जानवरों तक पर दिखाई देगा। मानसून के जुलाई तथा अगस्त महीने के आंकड़ों का विश्लेषण करने के बाद 'क्लाईमेट ट्रेंड्स' की रिपोर्ट में बताया गया है कि पश्चिमी राजस्थान में 78 फीसद, कच्छ में 42, पश्चिमी मध्यप्रदेश में 36, मराठवाड़ा में 27,

गुजरात में 24 और विदर्भ में 22 फीसद ज्यादा बारिश हुई, वहीं उत्तर प्रदेश में 44, बिहार में 39, झारखंड में 27 और पश्चिम बंगाल में 18 फीसद कम बारिश हुई।

विभिन्न अध्ययनों में यह तथ्य बार-बार सामने आ रहा है कि मानसूनी बारिश की तीव्रता बढ़ते जाने का सबसे बड़ा कारण वैश्विक तापमान ही है और अगर पर्यावरण के साथ खिलवाड़ इसी प्रकार जारी रहा तो ऐसी त्रासदियां आने वाले समय में और गंभीर रूप लेंगी, लेकिन प्रकृति द्वारा बार-बार दी जा रही गंभीर चेतावनियों के बावजूद कोई इनसे सबक सीखने को तैयार नहीं दिखता। एक ओर जहां आर्थिक रूप से संपन्न देशों ने प्रकृति से छेड़छाड़ का सिलसिला जारी रखा है, वहीं विकासशील देशों ने भी जलवायु परिवर्तन को कभी बहुत गंभीरता से नहीं लिया। विकसित देश इस समस्या पर नियंत्रण के प्रयास के बजाय इसकी जिम्मेदारी का ठीकरा विकासशील देशों पर ही फोड़ते रहे हैं।

मानूसनी बारिश में अब शहर के शहर, गांव के गांव डूब जाते हैं। ऐसे में यह गंभीर सवाल खड़ा होता है कि आखिर मानसूनी बारिश अपना व्यवहार क्यों बदल रही है? अति वर्षा और बाढ़ की स्थिति के लिए जलवायु परिवर्तन के अलावा विकास की विभिन्न परियोजनाओं के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई, नदियों में अवैध खनन आदि प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं, जिससे मानसून प्रभावित होने के साथ-साथ भू-क्षरण और नदियों द्वारा कटाव के चलते तबाही के मामले बढ़ रहे हैं। मौसम परिवर्तन पर 'नेचर कम्युनिकेशन' में प्रकाशित एक अध्ययन के मुताबिक जलवायु परिवर्तन के कारण भारत के एक हिस्से में जहां सूखे का संकट गहराने की आशंका है, वहीं देश के बड़े हिस्से को अगले तीस वर्षों में भारी बारिश का सामना करना पड़ सकता है। अध्ययन में उत्तर भारत में सूखे का संकट गहराने और वर्ष 2050 तक देश के कई हिस्सों में पंद्रह से तीस फीसद ज्यादा बारिश होने की संभावना जताई गई है। इन अप्रत्याशित बदलावों पर चिंता जताते हुए शोधकर्ताओं ने वर्ष 2100 तक देश के बड़े हिस्से में तीस फीसद ज्यादा बारिश का अनुमान व्यक्त किया है।

कुछ दिनों पहले 'पाट्सडैम इंस्टीट्यूट फार क्लाइमेट इम्पैक्ट रिसर्च' के एक अध्ययन में बताया गया था कि भारतीय मानसून की चाल को जलवायु परिवर्तन और ज्यादा गड़बड़ बना रहा है। अध्ययनकर्ताओं के अनुसार भारत के कई हिस्सों में अत्यधिक बारिश ने जो तबाही मचाई है, वह वैश्विक तापमान वृद्धि का दुष्परिणाम है। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक मानसून के मौसम के जिस ढर्रे को कभी सबसे स्थिर माना जाता था, उसमें एक बड़ा परिवर्तन स्पष्ट देखा जा रहा है। हालांकि यह समस्या केवल भारत की नहीं है, इससे दुनिया भर में भारी तबाही हो रही है। चीन, जर्मनी और अमेरिका सहित कई यूरोपीय देशों में इस साल आई भयानक बाढ़ ने पूरी दुनिया को अहसास करा दिया कि जलवायु में बड़ा परिवर्तन हो चुका है। मौसम वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी के तापमान में प्रत्येक डिग्री सेल्सियस वृद्धि से मानसूनी वर्षा में करीब पांच फीसद बढ़ोतरी हो रही है। बादल फटने और आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं में होती बढ़ोतरी को भी जलवायु परिवर्तन से ही जोड़ कर देखा जा रहा है।

Rajasthan Patrika- 17- October-2022

अगले 2 दिनों में कुछ जगहों पर हो सकती है बारिश

11 साल बाद मानसून की विदाई का टूटा रेकार्ड, इस बार 72 घंटे ज्यादा रुका

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायपुर. प्रदेश में 11 साल बाद मानसून की विदाई का रेकार्ड टूट गया है। वर्ष 2011 से 2021 तक मानसून की वापसी 15 अक्टूबर तक हो गई थी। इस वर्ष मानसून की वापसी 18 अक्टूबर तक बढ़ गई है। इससे साफ है कि बीते वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष मानसून कल तक छत्तीसगढ़ से लौट जाएगा। दक्षिण-पश्चिम मानसून के विदाई के लिए परिस्थितियां अनुकूल बन रही हैं, जिसके कारण प्रदेश में अगले 2 दिन में प्रदेश के कुछ और भाग से मानसून की विदाई संभव है। दक्षिण-पश्चिम मानसून के विदाई रेखा लुमडिंग, कैलाशहर, बहरामपुर, कानके, बिलासपुर, खड्डापुरी, बुलढाणा, दहनू हैं। इस साल प्रदेश में मानसून की स्थिति अच्छी रही है। मौसम विभाग के अनुसार इस सीजन छत्तीसगढ़ में 1 जून से 15 अक्टूबर तक 1297 मिमी बारिश हुई है. इसके साथ पिछले 7 वर्षों में सबसे ज्यादा बारिश का रिकॉर्ड बन गया है। इस दौरान प्रदेश में बस्तर संभाग के बीजापुर जिले में सर्वाधिक बारिश हुई है। मौसम विभाग के अनुसार बीजापुर में 2434.2 मिमी और सरगुजा में जिले में सबसे कम 627.0 मिमी औसत बारिश दर्ज की गई है। बस्तर, रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर संभाग में इस साल अच्छी बारिश हुई है, लेकिन सरगुजा संभाग में मानसून की दस्तक के बाद से ही बारिश कम हुई है।

अब भी बना है सिस्टम

प्रदेश में बंगाल की खाड़ी से पर्याप्त में नमी आ रही है जिसके कारण कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने अथवा गरज चमक के साथ छींटे पड़ने की संभावना है। प्रदेश में एक-दो स्थानों पर गरज चमक के साथ वज्रपात भी हो सकती है।

देर से आया था मानसून : मानसून आगमन की तारिख 10 जून तय है। 2020 में मानसून 9-10 जून की रात तक ही रायपुर पहुंच गया था। लेकिन इस बार मानसून की दस्तक प्रदेश में 16 जून को हुई थी।

इन जिलों में इतनी बारिश : राज्य स्तरीय बाढ़ नियंत्रण से मिले आंकड़े बताते हैं कि जून से अब तक सूरजपुर में 1060.6 मिमी, बलरामपुर में 1096.6 मिमी, जशपुर में 1100.3 मिमी, कोरिया में 916.5 मिमी, रायपुर में 950.2 मिमी, बलौदाबाजार में 1197.7 मिमी, गरियाबंद में 1297.3 मिमी, महासमुंद में 1173.4 मिमी, धमतरी में 1354.4 मिमी, बिलासपुर में 1487.6 मिमी, मुंगेली में 1350. 1 मिमी, रायगढ़ में 1242.2 मिमी, जांजगीर-चांपा में 1397.2 मिमी, कोरबा में 1254.5 मिमी, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही में 1114.3 मिमी, दुर्ग में 1015.9 मिमी, कबीरधाम में 1176.0 मिमी राजनांदगांव में 1255.9 मिमी, बालोद में 1331.9 मिमी, बेमेतरा में 739.3 मिमी, बस्तर में 1862.1 मिमी, कोण्डागांव में 1313.2 मिमी, कांकेर में 1595.6 मिमी, नारायणपुर में 1514.0 मिमी, दंतेवाड़ा में 1838.1 मिमी और सुकमा में 1620.0 मिमी बारिश दर्ज की गई।

कब-कब लौटा मानसून

वर्ष	-	तारीख
2011	-	15 अक्टूबर
2012	-	12 अक्टूबर
2013	-	8 अक्टूबर
2014	-	5 अक्टूबर
2015	-	14 अक्टूबर
2016	-	15 अक्टूबर
2017	-	12 अक्टूबर
2018	-	11 अक्टूबर
2019	-	9 अक्टूबर
2020	-	10 अक्टूबर
2021	-	15 अक्टूबर

Rajasthan Patrika- 17- October-2022

चम्बल की नहरों से जल प्रवाह पर स्काडा सिस्टम से होगी निगरानी

राजस्थान व मध्यप्रदेश में जल बंटवारे का विवाद होगा खत्म

पत्रिका ग्राउंड रिपोर्ट

रणजीतसिंह सोलंकी
patrika.com

कोटा. राजस्थान और मध्यप्रदेश के बीच चम्बल जल बंटवारे का विवाद खत्म होगा। दोनों राज्य चम्बल की नहरों पर पानी का हिसाब रखने के लिए स्काडा सिस्टम लगाएंगे। मध्यप्रदेश सरकार ने डेढ़ करोड़ रुपए राजस्थान सरकार के खाते में जमा करवाए हैं। अब मध्यप्रदेश सरकार ने कहा कि राजस्थान सरकार भी अपने हिस्से की रकम जल्द जमा करवाए।

चम्बल की नहरों से राजस्थान और मध्यप्रदेश में सिंचाई की जाती है। कोटा बैराज से निकलने वाली दाईं मुख्य नहर से मध्यप्रदेश तक सिंचाई होती है। दोनों राज्यों के बीच जल बंटवारा तय है।

कोटा चम्बल की दाईं मुख्य नहर, जो कोटा बैराज से निकलती है।

जल बंटवारा आज तय होगा

दोनों राज्यों में चम्बल के गांधी सागर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर बांध और कोटा बैराज के पानी का आकलन कर लिया है। मध्यप्रदेश-राजस्थान इंटर स्टेट टेक्नीकल कमेटी की बैठक सोमवार को दोनों राज्यों के बीच होगी। अध्यक्षता मध्यप्रदेश के यमुना बेसिन के मुख्य अभियंता करेंगे। इसमें दोनों राज्यों के आला अधिकारी जुटेंगे।

क्या है स्काडा

स्काडा सिस्टम पीएलसी से जुड़े सेंसर और नेटवर्क उपकरणों से डेटा प्राप्त करता है। वे गति, जल प्रवाह दर, तापमान और दबाव जैसे मापदंडों को मापते हैं। यह डेटा तब एक पीएलसी को भेजा जाता है और फिर कन्ट्रोल रूम में ऑपरेटर के लिए विश्लेषण और आवश्यकतानुसार निर्णय लेने के लिए भेजा जाता है।

फैक्ट फाइल

- **1960** में चम्बल का नहरी तंत्र विकसित
- **63** दाईं और बाईं मुख्य नहर की शाखाओं, उपशाखाओं व वितरिकाओं की संख्या
- **16** किमी आबादी क्षेत्र में दाईं मुख्य नहर व इसकी छोटी नहर है
- **05** किमी आबादी क्षेत्र में बाईं मुख्य नहर, माइनरें तथा वितरिकाएं फैली हुई हैं
- **1.27** लाख हेक्टेयर दाईं मुख्य नहर का सिंचित क्षेत्र
- **1.2** लाख हेक्टेयर बाईं मुख्य नहर का सिंचित क्षेत्र